

परमाणु हथियारों पर नैतिकता

हरिश्मिता और नागासाकी बम वस्फोटों के बचे लोगों का प्रतिनिधित्व करने वाले संगठन **नहोन हडिंकायो को वर्ष 2024 का नोबेल शांतिपुरस्कार** प्रदान किये जाने से परमाणु हथियारों से उत्पन्न नैतिक चुनौतियों पर वैश्विक चर्चा पुनः शुरू हो गई है। परमाणु बम वस्फोटों के वनिशकारी प्रभाव और परमाणु युद्ध के नरिंतर खतरे के कारण **गहन नैतिक जाँच की आवश्यकता** है। जबकि कुछ लोग **शांति के लिये परमाणु नरिोध को आवश्यक** मानते हैं, वही अन्य लोग ऐसी वनिशकारी शक्ति के अधिकार को स्वाभाविक रूप से अनैतिक मानते हैं। यह नैतिक बहस केवल वैश्विक शक्तियों तक ही सीमति नहीं है, बल्कि भारत जैसे देशों में भी इसकी प्रबलता है, जो स्वयं परमाणु दुवधियों का सामना कर रहे हैं।

परमाणु हथियारों के नैतिक आयाम क्या हैं?

- **परमाणु हथियार अनैतिक:** परमाणु हथियारों को उनके वनिशकारी परिणामों के कारण **व्यापक रूप से अनैतिक** माना जाता है, जो तात्कालिक वनिश के साथ-साथ **दीर्घकालिक पर्यावरणीय एवं मानवीय क्षति के रूप में** भी हो सकते हैं।
- **मानवीय परिणाम:** परमाणु हथियारों की भयावह मानवीय कीमति **हरिश्मिता और नागासाकी** की त्रासदयियों से प्रदरशति होती है। इन बमों ने **तुरंत हजारों लोगों की जान** ले ली और बचे हुए लोगों को **लंबे समय तक पीड़ा का सामना** करना पड़ा। वकिरिण का प्रभाव आज भी महसूस किया जाता है।
 - इससे पता चलता है कि परमाणु हथियार किसी भी नैतिक मानक से कहीं आगे हैं क्योंकि वे **नागरिकों को हानि पहुँचाते हैं** और पीढ़ियों तक उनकी पीड़ा का कारण बनते हैं।
- **न्यायपूर्ण युद्ध सदिधांत का उल्लंघन:** आलोचकों का तर्क है कि परमाणु हथियार **न्यायपूर्ण युद्ध सदिधांतों, वशिषकर आनुपातकता एवं भेदभाव के नयिमें का उल्लंघन** करते हैं।
 - न्यायपूर्ण युद्ध सदिधांत उन **सदिधांतों का एक समूह** है जो यह नरिधारति करते हैं कि कब युद्ध में शामिल होना उचित है और युद्ध को नैतिक रूप से कैसे संचालित किया जाना चाहिये। सदिधांत को दो मुख्य भागों में वभिजति किया गया है:
 - **जूस एड बेलम (युद्ध का अधिकार):** यह उन परिस्थितियों को नरिधारति करता है जिनके तहत **युद्ध की उचित रूप से घोषणा** की जा सकती है, जैसे उचित कारण, सही प्राधिकारी और अंतमि उपाय।
 - **जूस इन बेल्लो (युद्ध में आचरण):** यह नयितरति करता है कि युद्ध को नैतिक रूप से कैसे संचालित किया जाना चाहिये, आनुपातकता सुनशिचति करना, योद्धाओं और नागरिकों के बीच अंतर करना तथा कैदियों के साथ मानवीय व्यवहार सुनशिचति करना।
 - परमाणु हथियार दोनों ही मामलों में वफिल होते हैं। वे बिना किसी भेदभाव के जनसंहार करते हैं और किसी भी सैन्य उद्देश्य को प्राप्त करने के लिये **आवश्यकता से अधिक हानि पहुँचाते हैं**।
- **पूर्व-आक्रमण और नविरक युद्ध:** एक अन्य नैतिक आयाम **पूर्व-आक्रमण का वचिार** है। क्या किसी देश को परमाणु हथियार का प्रयोग करना चाहिये यदि उसे लगता है कि उस पर हमला होने वाला है?
 - इससे **नैतिक प्रश्न** उठते हैं। हम कैसे सुनशिचति कर सकते हैं कि खतरा वास्तविक है? यदि कोई देश पहले हमला करता है, तो वह डर के आधार पर **नरिदोष लोगों की हत्या का जोखमि** उठाता है। यहाँ नैतिक चिंता यह है कि तथ्य के स्थान पर **भय से कार्य करने से अन्यायपूर्ण युद्ध** हो सकते हैं।

परमाणु नविरण का नैतिकता से क्या संबंध है?

- **खतरों के संबंध में नैतिकता:** नैतिक प्रश्न इस बात पर नरिभर करता है कि क्या परमाणु हथियारों के खतरे का उपयोग करना नैतिक रूप से सही है, जो कि भारी वनिश और नागरिकों की मृत्यु का कारण बन सकता है, भले ही इसका उद्देश्य युद्ध को रोकना हो।
 - यद्यपि परमाणु नविरण का लक्ष्य संघर्ष को रोकना है, लेकिन **खतरा अपने आप में ऐसे कार्य करने की आकांक्षा का संकेत** देता है जो नविरण वफिल होने पर नैतिक रूप से अस्वीकार्य हो सकते हैं।
- **पारस्परिक रूप से सुनशिचति वनिश (MAD):** MAD का सुझाव है कि किसी भी परमाणु संघर्ष का परिणाम सम्पूर्ण वनिश होगा, जिससे सामूहिक वनिश की संभावना के बावजूद शांति बनाए रखने का नैतिक मुद्दा उठता है।
 - नैतिक प्रश्न यह है कि क्या वैश्विक सुरक्षा को एक ऐसी प्रणाली पर आधारित करना स्वीकार्य है जो संभावित रूप से मानवता को समाप्त कर सकती है यदि प्रतिरिध वफिल हो जाता है।
- **आकस्मिक या अनधकृत प्रकषेपण:** तकनीकी या मानवीय त्रुटियों के कारण **आकस्मिक अथवा अनधकृत परमाणु प्रकषेपण की संभावना अनपेक्षित परमाणु संघर्ष** के जोखमिों के बारे में नैतिक चिंताओं को जन्म देती है।
 - इस बारे में नैतिक प्रश्न है कि ऐसी आकस्मिक घटनाओं के परिणामों के लिये कौन ज़मिमेदार है, और क्या **ये जोखमि परमाणु नरिोध के नैतिक औचित्य को कमज़ोर** करते हैं।

- **सुरक्षा एवं वैश्विक स्थिरता:** यद्यपि परमाणु नविवरण कुछ देशों को सुरक्षा प्रदान कर सकता है, लेकिन यह अन्य देशों के लिये अस्थिरता भी उत्पन्न करता है, जिससे यह नैतिक प्रश्न उठता है कि क्या यह असमान सुरक्षा उचित है।
 - इससे एक नैतिक प्रश्न उठता है कि क्या यह उचित है कि परमाणु-सशस्त्र राष्ट्र वैश्विक सुरक्षा पर हावी हो जाएं, जिससे गैर-परमाणु राष्ट्र अधिक असुरक्षित हो जाएं।
- **परमाणु हथियारों की होड़ और नरिस्तरीकरण:** चूँकि विशाल शस्त्रागार होने से कोई देश अधिक खतरनाक हो जाता है, बहुत से लोग सोचते हैं कि विश्व युद्ध को रोकने के लिये नरिस्तरीकरण की दृष्टि में कार्य करना देशों का नैतिक दायित्व है।
 - नविवरण नीतियों द्वारा संचालित हथियारों की होड़ से हथियारों का अनयंत्रित संचय होता है, जिससे तनाव बढ़ने के के स्थान पर शांति को बढ़ावा देने की ज़िम्मेदारी के बारे में नैतिक चर्चाएँ बढ़ जाती हैं।
- **परमाणु नविवरण बनाम शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व:** शांति बनाए रखने के लिये भय का प्रयोग परमाणु नविवरण का आधार है, जो खतरों के आधार पर शांति की व्यवहार्यता एवं नैतिकता के बारे में नैतिक प्रश्न उठाता है।
 - नैतिक तर्क प्रायः यह सुझाते हैं कि कूटनीति एवं सहयोग के माध्यम से शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व, व्यवस्था बनाए रखने के लिये परमाणु खतरों पर नरिभर रहने की तुलना में बेहतर, नैतिक रूप से सही विकल्प है।

वैश्विक परमाणु प्रशासन पर दार्शनिक दृष्टिकोण क्या हैं?

- **वशिवबंधुत्व:** वशिवबंधुत्व का मानना है कि हम सभी एक वैश्विक समुदाय के सदस्य हैं, चाहे उनकी राष्ट्रियता कुछ भी हो। इस दृष्टिकोण से, परमाणु हथियार केवल कुछ देशों के लिये नहीं बल्कि सभी मनुष्यों के लिये खतरा है।
 - वशिवबंधुत्व का तर्क है कि विश्व स्तर पर मानव जीवन की रक्षा करने के नैतिक कर्तव्य हेतु परमाणु हथियारों से पूरी तरह छुटकारा पाना आवश्यक है। उनका मानना है कि राष्ट्रीय शक्ति नहीं, बल्कि वैश्विक सहयोग ही मार्गदर्शक सिद्धांत होना चाहिये।
- **उदारवादी अंतरराष्ट्रीयवाद:** उदार अंतरराष्ट्रीयवाद इस विचार का समर्थन करता है कि वैश्विक सुरक्षा केवल अंतरराष्ट्रीय सहयोग के माध्यम से ही प्राप्त की जा सकती है। यह सिद्धांत परमाणु अप्रसार संधि (NPT) जैसी संधियों का समर्थन करता है, जो परमाणु हथियारों के प्रसार को सीमित करता है।
- **रचनावाद/नरिस्तिविद:** रचनावादी इस बात पर ध्यान केंद्रित करते हैं कि किस प्रकार वैश्विक मानदंड और मूल्य राष्ट्रों के परमाणु हथियारों के बारे में सोचने के तरीके को आकार प्रदान करते हैं। अतीत में, परमाणु हथियार रखने को शक्ति के संकेत के रूप में देखा जाता था। लेकिन अब, बहुत से लोग नरिस्तरीकरण को एक नैतिक लक्ष्य के रूप में देखते हैं। परमाणु हथियारों के बारे में सोच में बदलाव से पता चलता है कि मानदंडों में बदलाव से किस प्रकार अधिक नैतिक शासन को बढ़ावा मिल सकता है।
- **वैश्विक न्याय सिद्धांत:** वैश्विक न्याय सिद्धांत अंतरराष्ट्रीय संबंधों में नष्पक्षता के लिए तर्क देते हैं। इस दृष्टिकोण से, परमाणु हथियार असमानता को जन्म देते हैं। कुछ राष्ट्र परमाणु हथियारों से अपनी रक्षा कर सकते हैं, जबकि अन्य असुरक्षित रह जाते हैं। वैश्विक न्याय नरिस्तरीकरण का आह्वान करता है ताकि कोई भी देश परमाणु हमले की धमकी देकर दूसरों पर हावी न हो सके।

भारत की परमाणु सिद्धांत नीति क्या है?

- **परमाणु सिद्धांत नीति:** भारत की परमाणु सिद्धांत नीति विश्वसनीय न्यूनतम नविवरण बनाए रखने के सिद्धांतों पर आधारित है, जिसमें संयम और ज़िम्मेदारी पर जोर दिया गया है। इस सिद्धांत को पहली बार आधिकारिक रूप से वर्ष 1999 में भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार बोर्ड द्वारा रेखांकित किया गया था और बाद में वर्ष 2003 में भारत सरकार द्वारा इसे अपनाया गया था।
 - **नो फ़र्स्ट यूज पॉलिसी:** भारत की पहले प्रयोग न करने की नीति (No First Use policy) को परमाणु नविवरण में एक नैतिक रुख के रूप में तैयार किया गया है, यह सुनिश्चित करते हुए कि परमाणु हथियारों का प्रयोग केवल प्रतियोगिता में किया जाएगा।
 - यह नीति भारत को एक उत्तरदायित्वपूर्ण परमाणु शक्ति के रूप में स्थापित करती है, जो परमाणु संघर्ष के खतरों को कम करने के लिये प्रतियोगिता है। हालाँकि, आलोचकों का तर्क है कि यह संयम नीति भी ऐसे हथियारों को रखने के नैतिक जोखिमों को पूरी तरह से संबोधित नहीं करती है।
 - **वशिवसनीय न्यूनतम नविवरण:** भारत का वशिवसनीय न्यूनतम नविवरण सिद्धांत पहले उपयोग न करने की नीति और बड़े पैमाने पर जवाबी कार्रवाई की क्षमता के साथ, नविवरण के लिये न्यूनतम लेकिन प्रभावी परमाणु शस्त्रागार बनाए रखने पर केंद्रित है।
 - **वैश्विक नरिस्तरीकरण के प्रतियोगिता प्रतियोगिता:** भारत ने संयुक्त राष्ट्र जैसे मंचों पर वैश्विक परमाणु नरिस्तरीकरण का नरिस्तर समर्थन किया है तथा विश्व भर में परमाणु शस्त्रागारों में चरणबद्ध एवं सत्यापन योग्य कमी लाने का आह्वान किया है।
 - सुरक्षा कारणों से अपने परमाणु शस्त्रागार को बनाए रखते हुए, भारत का तर्क है कि वैश्विक नरिस्तरीकरण ही परमाणु दुविधा का अंतिम नैतिक समाधान है।
- **भारत की परमाणु नीति पर दृष्टिकोण :**
 - **महात्मा गांधी का शांतिवाद:** अहसा के प्रबल समर्थक गांधी जी ने परमाणु हथियारों का कड़ा विरोध किया। उन्होंने कहा, बम का उपयोग करते समय, समग्र रूप से मानवता ने नैतिक दृष्टिकोण से कुछ आवश्यक चीज़ों को खो दिया था।
 - उनका दर्शन भारतीय विचार में शांतिवादी परंपरा के अनुरूप है, जो मानता है कि सामूहिक विनाश के हथियार अहसा और मानवीय गरमि के मूल्यों के साथ असंगत हैं।
 - **के. सुब्रमण्यम का रणनीतिक दृष्टिकोण:** एक प्रमुख भारतीय रणनीतिकार के. सुब्रमण्यम ने राष्ट्रीय सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिये एक आवश्यक बुराई के रूप में परमाणु नविवरण की वकालत करते हुए एक विपरीत दृष्टिकोण प्रस्तुत किया।
 - उनके विचार केवल नविवरण के लिये परमाणु हथियार बनाए रखने की नैतिक ज़िम्मेदारी पर जोर देते हैं, तथा यह सुनिश्चित करते हैं कि भारत पहले प्रयोग न करने (NFU) की नीति के प्रतियोगिता प्रतियोगिता रहे।
 - **होमी भाभा का व्यावहारिक दृष्टिकोण:** भारत के परमाणु कार्यक्रम के जनक होमी भाभा ने परमाणु क्षमताओं के विकास को उचित ठहराते हुए इस बात पर बल दिया था कि ऐसे विश्व में जहाँ अन्य प्रमुख शक्तियों के पास परमाणु हथियार हैं, भारत को अपनी सुरक्षा करने की

आवश्यकता है।

- उनका दृष्टिकोण **विकिपूरण दृष्टिकोण को प्रतिबिम्बित** करता है, जहाँ परमाणु क्षमता को संघर्ष को बढ़ावा देने के स्थान पर **शांति सुनिश्चित करने के साधन के रूप में देखा** जाता है।

आगे की राह

- **अंतरराष्ट्रीय कानूनी ढाँचे को मजबूत बनाना:** जवाबदेहता सुनिश्चित करने के लिये परमाणु शस्त्रागार में चरणबद्ध कटौती के लिये स्पष्ट समयसीमा और सत्यापन तंत्र के साथ कानूनी रूप से बाध्यकारी ढाँचा स्थापित किया जाना चाहिये।
- **एक वैश्विक परमाणु नविवरण व्यवस्था बनाना:** राष्ट्रों को एक वैश्विक परमाणु संयम शासन स्थापित करने के लिये सहयोग करना चाहिये जो पारदर्शिता, परमाणु संघर्ष को कम करने और आपसी विश्वास निर्माण को प्राथमिकता देता है।
- **नैतिक नेतृत्व एवं नरिस्तरीकरण कूटनीतिको बढ़ावा देना:** परमाणु हथियार संपन्न देशों को नविवरण के स्थान पर कूटनीतिको बढ़ावा देकर नैतिक नेतृत्व अपनाना चाहिये।
 - परमाणु हथियारों के नैतिक एवं मानवीय परणामों पर वैश्विक सम्मेलन जैसी कूटनीतिक पहल अंतरराष्ट्रीय सम्मता को नरिस्तरीकरण की ओर स्थानांतरित कर सकती है।
- **परमाणु जोखिम न्यूनीकरण प्रौद्योगिकियों में निवेश करना:** तकनीकी सुरक्षा उपायों के माध्यम से आकस्मिक परमाणु युद्ध के जोखिम को न्यूनतम करने के लिये वैश्विक प्रयास किये जाने चाहिये।
 - इसमें परमाणु कमांड और नियंत्रण प्रणालियों के लिये वफिलता-सुरक्षित तंत्र विकसित करना, गलतफहमी को कम करने के लिये AI एवं संचार प्रोटोकॉल में सुधार करना तथा परमाणु शस्त्रागारों का नियमित जोखिम आकलन करना शामिल है।
- **नरिस्तरीकरण प्रयासों में नागरिक समाज को शामिल करना:** सरकारों एवं अंतरराष्ट्रीय संगठनों को परमाणु नरिस्तरीकरण पर वैश्विक बहस में नागरिक समाज को शामिल करना चाहिये, जमीनी स्तर पर आंदोलनों को प्रोत्साहित करना चाहिये तथा संधि वार्ताओं एवं वैश्विक मंचों में गैर-सरकारी संगठनों (NGO) की भागीदारी को सुवर्धित करना चाहिये।
- **मानवीय प्रभाव आकलन विकसित करना:** अंतरराष्ट्रीय निकायों को परमाणु हथियारों के उपयोग के दीर्घकालिक मानवीय प्रभाव पर नहिण हडिंक्यो द्वारा किये गए कार्य के समान व्यापक अध्ययन करना चाहिये, ताकि न केवल रणनीतिक, बल्कि नैतिक आधार पर नरिस्तरीकरण हेतु एक मजबूत आधार निर्मित किया जा सके।
- **नए परमाणु मुक्त क्षेत्र निर्मित करना:** राष्ट्रों को अतिरिक्त परमाणु-हथियार-मुक्त क्षेत्रों के निर्माण के लिये प्रयास करना चाहिये, विशेषकर उन क्षेत्रों में जहाँ परमाणु संघर्ष अधिक है, जैसे मध्य-पूर्व और दक्षिण एशिया।
- **जवाबदेहता एवं पारदर्शिता बढ़ाना:** अंतरराष्ट्रीय परमाणु शासन को पारदर्शिता को प्राथमिकता देनी चाहिये। नरिस्तरीकरण संधियों के अनुपालन की निगरानी और परमाणु-सशस्त्र राज्यों को उनकी प्रतिबद्धताओं के लिये जवाबदेहता सुनिश्चित करने के लिये बहुपक्षीय सत्यापन तंत्र स्थापित किया जाना चाहिये।

नष्िकर्ष:

नैतिक दृष्टिकोण से, परमाणु हथियार स्वाभाविक रूप से **मानवीय गरमा और न्याय के सिद्धांतों का उल्लंघन** करते हैं। उनका अस्तित्व नैतिक दृष्टि से घृणित है, क्योंकि इससे सामूहिक वनिाश और नरिदोष लोगों की जान जाने की संभावना है, भले ही वे **नविवरण के रूप में कार्य** करते हों। एक सुरक्षित वैश्विक भविष्य को भय और वनिाश के स्थान पर सहयोग और जीवन के प्रति सम्मान पर आधारित नरिस्तरीकरण को प्राथमिकता देनी चाहिये। परमाणु खतरों से मुक्त विश्व प्राप्त करना न केवल एक रणनीतिक आवश्यकता है, बल्कि **मानवता के लिये एक नैतिक दायित्व** भी है।

दृष्टिभेन्स प्रश्न:

प्रश्न 1. वैश्विक सुरक्षा पर इसके प्रभाव और न्यायपूर्ण युद्ध सिद्धांत के सिद्धांतों पर विचार करते हुए परमाणु नविवरण के नैतिक आयामों की आलोचनात्मक जाँच कीजिये। (15 अंक)

प्रश्न 2. परमाणु हथियारों पर भारत के परपिरेक्ष्य पर उसकी 'पहले प्रयोग नहीं' नीति और वैश्विक नरिस्तरीकरण के प्रति प्रतिबद्धता के संदर्भ में चर्चा कीजिये। (15 अंक)